International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 840-841

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 840-841
www.allresearchjournal.com
Received: 12-11-2015
Accepted: 19-12-2015

डॉ. प्रिय अशोक
+2 शिक्षक, इतिहास विभाग, +2 बी. के. डी. राजकीय बालक उच्च विद्यालय, (जिला स्कूल), दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. प्रिय अशोक
+2 शिक्षक, इतिहास विभाग, +2 बी. के. डी. राजकीय बालक उच्च विद्यालय, (जिला स्कूल), दरभंगा, बिहार, भारत

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में राजा राममोहन राय का जीवन–दर्शन

डॉ. प्रिय अशोक

सारांशः
राममोहन ने अपने पारिवारिक इतिहास और जीवन के बारे में, अपने इंगलैण्ड के प्रवास काल में अपने एक अंगरेज मित्र को पत्र लिखकर एक संक्षिप्त विवरण दिया था जो 'लंदन एथेनेयम' और बाद में 'लिटरेरी गजट' में प्रकाशित हुआ। सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक, राजनैतिक विषयों पर लिखी पुस्तकों लेखों, समसामयिक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचारों, सरकारी दस्तावेजों और समसामयिक विशिष्ट लोगों के विवरणों के अलावा यही उनका एकमात्र आत्म परिचयात्मक दस्तावेज है। राममोहन में बचपन से ही धार्मिक रूझान था और वे बचपन में अनेक धार्मिक रीतियों और कर्मकांडों का निष्ठापूर्वक पालन करते थे। लेकिन पटना और बनारस की शिक्षा ने उनके युवक मन में हलचल सी पैदा कर दी थी। वे हिन्दू धर्म–दर्शन के प्रश्नों के समाधान में विचार–निमग्न रहने लगे। एक के बाद एक प्रश्न, एक के बाद एक संदेह उनके मन में उठने लगा। ये धार्मिक रूढ़ियां और कर्मकांड, पाखंड और ढकोसले लगने लगे। मूर्तिपूजा क्या है? सच्चा धर्म क्या है? एक ओर मुस्लिम एकेश्वरवाद, सूफी रहस्यवाद और प्राचीन वेद उपनिषदों ने प्रश्न पर प्रश्न खड़े कर दिये। उनके विचारों में परिवर्तन के लक्षण दिखाई पड़ने लगे। इसी अवधि में अकसर वे अपने पिता से इन प्रश्नों पर वाद–विवाद में उलझने लगे। रमाकांत अपने बेटे के प्रचलित धर्म–विरोधी विचारों को सुनकर दुखी रहने लगे। आगे चलकर पिता–पुत्र में भारी मतभेद पैदा हो गये।

प्रस्तावनाः
राजा राममोहन राय में बचपन से ही धार्मिक रूझान था और वे बचपन में अनेक धार्मिक रीतियों और कर्मकांडों का निष्ठापूर्वक पालन करते थे। लेकिन पटना और बनारस की शिक्षा ने उनके युवक मन में हलचल सी पैदा कर दी थी। वे हिन्दू धर्म–दर्शन के प्रश्नों के समाधान में विचार–निमग्न रहने लगे। विलियम एडम ने राममोहन विषयक अपने संस्मरणों में उनको उद्धत करते हुए लिखा था कि ''एक दिन उनके पिता ने कहा कि मैं जब भी कोई तर्क तुम्हारे सामने रखता हूं तुम हमेशा उसका उत्तर 'किंतु–परंतु' से आरंभ करते हो।'' अपने पिता के विचारों का खुलेआम विरोध न करते हुए भी वे बहुधा अपने संदेह को हलकी–सी मुस्कुराहट के साथ पेश करने में हिचकते नहीं थे। अंत में ऐसी परिस्थिति पैदा हो गई कि राममोहन समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें। इसी समय उन्होंने प्रचलित धार्मिक पाखडों और मूर्तिपूजा के विरूद्ध 'हिन्दूओं की मूर्तिपूजा और धर्मप्रणाली' नामक एक छोटी–सी पुस्तिका लिखी। उनके आत्मपरिचयात्मक पत्र में इस पुस्तिका का उल्लेख है। इस पुस्तिका में लिखे विचारों से राममोहन के संस्कारवादी वैष्णव पिता अत्यंत क्षुब्ध हुए और आखिरकार उनके आपसी संबंधों में भारी दरार पड़ गया। राममोहन के लंदन प्रवास काल में उनके परम मित्रों में से डॉ. लान्ट कार्पेन्टर ने अपनी पुस्तक में इस घटना का वर्णन इस प्रकार दिया हैः ''पिता के अधिकारों का विरोध न करते हुए भी वे अकसर उनसे धार्मिक विश्वासों के बारे में प्रश्न पूछते रहते। उन्हें कोई संतोषपूर्ण उत्तर न मिलता और अंत में केवल पंद्रह वर्ष की छोटी सी आयु में उन्होंने घर छोड़ने की ठान ली और कुछ समय के लिए तिब्बत तक हो आये जिससे वहां वे एक दूसरे धर्म के बारे में जान सकें। उस देश में उन्होंने दो या तीन वर्ष बिताये।
डॉ. कार्पेन्टर ने एक टिप्पणी में यह व्यक्त किया था कि यह बयान उन्होंने स्वयं राममोहन से लंदन में सुना था और बाद में यही एक बार फिर स्टेपलटन ग्रोब में भी सुना। राममोहन घर छोड़कर निकल पड़े। इस समय उनकी उम्र केवल पंद्रह या सोलह वर्ष की रही होगी। भारत के कई प्रदेशों में घूमने के बाद हिमालय की ऊंची पहाड़ियों को पार कर संभवतः प्राचीन काल के मानसरोवर वाले तीर्थयात्रा पथ से हाते हुए तिब्बत की भूमि पर भी पहुंचे। बौद्ध धर्म के प्रति स्वाभाविक जिज्ञासा ही इस यात्रा का कारण रहा हो या केवल घुमक्कड़ी। यह सब उस काल की घटना है जब न रेलगाड़ियां थीं, न मोटर और न ही और कोई आधुनिक साधन। आने–जाने के रास्ते बीहड़ जंगलों और दुर्दम घाटियों से होकर गुजरते थे। उनके तिब्बत पहुंचने और वहां रहने के बारे में कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलते। कुछ विद्वानों ने इस पर संदेह भी प्रकट किया है। लेकिन उनके सभी जीवनीकार और कुछ मित्रों ने इस बारे में पर्याप्त प्रमाणों के न होते हुए भी घटना को उनके जीवन–कथा का हिस्सा माना है।

वस्तुतः उनके जीवन का यह भाग मुख्यतः किंवदंतियों और अनुमानों पर ही आधारित है। राममोहन ने स्वयं कहीं भी जीवन के इस भाग के बारे में कोई विस्तृत विवरण नहीं छोड़ा। अपने आत्म परिचयात्मक पत्र में राममोहन ने लिखा था– ''कई प्रदेशों की यात्रा के बाद भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना से आहत होकर भारत के बाहर के कई देशों की यात्रा की।''

उनके तिब्बत प्रवास काल के समय की एक कहानी प्रायः सभी जीवनीकारो ने उद्धत की है। राममोहन ने जब तिब्बत में किसी जीवित लामा को भगवान् बुद्ध के रूप में पूजित होते देखा तो वे चकित रह गये। यह मूर्तिपूजा या अवतारवाद की पराकाष्ठा थी। इसके अलावा न जाने कितने संस्कारों, धार्मिक कुरीतियों और अंधविश्वासों में उन्होंने उस पूरे सामंतवादी समाज को डूबा देखा। वे कभी–कभी विरोधी विचारों को प्रकट कर ही देते थे। नतीजा यह हुआ कि तिब्बती धार्मिक पडे उनसे उलझ पड़े। तब उन्हें अपनी जान तक बचाना मुश्किल काम हो गया था। कहा जाता है कि, एक तिब्बती स्त्री ने इस हालत में उनकी बड़ी मदद की और वे जान बचाकर भागने में सफल हुए। इसी से वे सारी उम्र स्त्री जाति के प्रति अपनी कृतज्ञता जताने में कभी न चूके। उनके हिमालय पार के देशों के भ्रमण के बारे में कोई प्रमाणिक विवरण उपलब्ध नहीं हो सका है, फिर भी यह तय है कि तीन–चार वर्ष तक देश और विदेशों की यात्रा करके वे वापस लौट आये। पिता रमाकांत भी बेटे के लिए स्वाभाविक रूप से चिंतित थे और उनके आदमी राममोहन की खोज में लगे हुए थे। जो भी हो, राममोहन घर लौट आये और बाप–बेटे में फिर से मेल–मिलाप होने के आसार दिखने लगे।

राममोहन के तिब्बत प्रवास के बारे में कई एक विद्वानों ने संदेह प्रकट किया है लेकिन डॉ. कार्पेन्टर ने स्पष्ट लिखा है कि उन्होंने स्वयं राममोहन से इस घटना का विवरण दो बार सुना था। इस वक्तव्य पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है। अपने संस्मरणों में रेवरेण्ड के.एस. मेकडोलैण्ड ने, जो कलकत्ता में 1879 में प्रकाशित हुआ, विवरण इस प्रकार है। ''अपने पटना प्रवास–काल में उन्होंने बौद्ध धर्म के बारे में काफी सुना होगा....तिब्बत जाकर वे बौद्ध धर्म को निकट से जान सकते थे और साथ ही वहां के आदिम निवासियों की पैशाचिक पूजा भी देख सके...।

इसके अलावा उनकी फारसी पुस्तक 'तुहफतुल मुवाहद्दीन' की भूमिका में लिखा है ''मैंने दुनिया के दूरदराज के इलाके में, मैदानों और पहाड़ों में दूर–दूर तक भ्रमण किया है।'' फ्रेंच विद्वान गर्सा द तासी जो उनके समसामयिक विद्वान थे और जिनसे उनका पत्र व्यवहार भी था, ने भी उनके तिब्बत प्रवास के बारे में लिखा है।

देश–विदेश भ्रमण से लौटने के बाद राममोहन एक बार फिर पारिवारिक धंधों के अलावा, धर्म, दर्शन और धर्मशास्त्रों के अध्ययन में जुट गये। पिता के साथ एक बार फिर से धर्म और धार्मिक आचार–व्यवहार के बारे में अकसर बहस होने लगी। मतभेद बढ़ते चले गये और वे एक बार फिर घर से निकाल दिये गये। इस बार वे बनारस चले गये। इसी बीच 1796 में राममोहन के पिता रमाकांत ने अपनी जायदाद का बंटवारा अपने तीन पुत्रों के बीच कर दिया। इस बंटवारे के अनुसार लागुलपाड़ा का मकान जगमोहन और राममोहन के हिस्से में संयुक्त रूप से आया। इसके अलावा कलकत्ते की जायदाद का हिस्सा भी राममोहन के हिस्से में आया। लेकिन इस बंटवारे ने राममोहन को अपने परिवार से करीब–करीब अलग–थलग कर दिया। जायदाद के झमेलों से भी राममोहन किसी हद तक तंग आ गये थे। वर्धमान के राजघराने के साथ इन जायदाद के मामले में पहले से ही कई मुकद्दमे चल रहे थे। यहां तक कि वर्धमान राज द्वारा दायर किये गये मुकद्दमे में रमाकांत को अदायगी न कर सकने के आरोप में थोड़े समय के लिए जेल जाना पड़ा। रमाकांत और राममोहन के बीच गहरे मतभेद थे, क्योंकि राममोहन को जायदाद के बंदोबस्त में अपने पिता और भाइयों के अपनाये रास्ते पसंद नहीं थे। इसी सिलसिले में जगमोहन को भी सजा भुगतनी पड़ी। रमाकांत जैसे–तैसे जेल से छूट आये लेकिन अब वे पूरी तरह टूट चुके थे 1803 में रमाकांत चल बसे। यहां एक बात विशेष उल्लेखनीय है कि रमाकांत ने अपने बेटों से, विशेष कर राममोहन के साथ मतभेद होते हुए भी जायदाद के बंटवारे के प्रश्न पर कोई भेदभाव नहीं बरता।

राममोहन के सहयोगी विलियम ऐडम ने अपने संस्मरणों में, जो 1826 में प्रकाशित हुए लिखा था कि पिता से मतभेद के कारण राममोहन को कोई दस या बारह वर्ष तक वाराणसी में जाकर रहना पड़ा। उनके जीवनीकार मिस कोलेट ने भी इसका हवाला दिया है। लेकिन इतने लंबे समय तक बनारस में ठहरने की बात कोई जंचती नहीं क्योंकि बाद की शोध सूचनाओं से जाहिर है कि 1796 में जब रमाकांत की जायदाद का बंटवारा हुआ उसके ठीक नौ महीने बाद राममोहन अपनी दोनों पत्नियों को अपनी मां तारिणी देवी के जिम्मे छोड़कर लागुलपाड़ा से कलकत्ते चले गये। वहां उन्होंने साहूकारी का व्यापार आरंभ कर दिया। ईस्ट इंडिया कंपनी के बड़े–बड़े अफसर उनके ग्राहकों में थे। इस धंधे में उन्होंने काफी धन कमाया।[18] इसके अलावा इस काल में उन्होंने कंपनी के कागजात और हुण्डियों में भी धन लगाने का व्यापार किया। 1799 में उन्होंने गोविन्दपुर और रामेश्वरपुर के कुछ तालुके खरीदे थे। इसके बाद ही कुछ समय के लिए राममोहन पटना और वाराणसी चले गये। अपने व्यापार और जायदाद की देखरेख वे अपने एक विश्वस्त मित्र राजीव–लोचन राय के जिम्मे छोड़ गये थे। 1800 में उनके पहले पुत्र राधाप्रसाद का जन्म हुआ। उत्तर भारत में राममोहन का निवास काल बहुत अधिक दिन नहीं रहा। राममोहन ने उत्तर भारत में चाहे जितने ही दिन बिताये हों यह स्पष्ट है कि वाराणसी में उन्होंने हिन्दू धर्म और शास्त्रों के अध्ययन में समय लगाया। प्रमाणों के आधार पर अब यह बात सामने आ गई है कि 1800 के आसपास राममोहन कलकत्ता लौट आये थे। 1801 में पहले–पहल उनकी मित्रता जोन डिगबी से हुई जो बाद में उनके अंतरंग मित्र और शुभचिंतक बने। डिगबी उन दिनों फोर्ट विलियम कॉलेज में स्नातक थे। इन्हीं प्रमाणों के आधार पर यह भी ज्ञात होता है कि इन्ही दिनों राममोहन का फोर्ट विलियम कॉलेज, जिसकी स्थापना सन् 1800 में हो चुकी थी, से गहरे संबंध स्थापित हो गये थे। सदर दीवानी अदालत के मुख्य काजी और फोर्ट विलियम कॉलेज के पंडित और मौलवियों से राममोहन का अच्छा खासा परिचय हो गया था, और सभी राममोहन की योग्यता और चरित्र के कायल थे।

निष्कर्ष

आज का भारत राममोहन राय के समय से दो सौ वर्ष आगे निकल चुका है और राममोहन के समय में जिस औपनिवेषिक विदेषी साम्राज्य की स्थापना हुई थी उससे भी देष को मुक्त हुए साठ साल बीच चुके है, फिर भी देष की मूल समस्याएँ आज भी मुँह बाये खड़ी है। सतियों की चिताएँ की चिताएँ जलायी जा रही थी और स्त्रियाँ आज भी दहेज की आग में झोंकी जा रही है। धर्म के नाम पर ढकोसला, व्यभिचार और संकीर्णता का बोलबाला आज भी है। साम्प्रदायिकता की समस्या से हम अभी तक जुझ रहे हैं। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर, समस्याओं के बीहड़ जंगल में पथ की खोज आज भी जारी है। ऐसी परिस्थिति में राममोहन का विचार–दर्षन आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उनके जीवन काल में।

संदर्भ सूचीः

1. BN. Life and times of Rajah Rammohun Roy P 79.
2. नगेन्द्र नाथ चट्टोपाध्यायः महात्मा राजा राममोहन रायेर जीवन चरित, पांचवां सं. 1928, पृ. 7
3. Iqbal Singh. Rammohan Roy P 31.
4. Carpentar, Lant: Review of the Labours, opinins and character of Ram Mohan Roy 1833, P 101-102.
5. Iqbal Singh, Rammohan Roy 1982, P 28.
6. Chanda and majumbar: Letters and documents 184, 1799, P 136.